Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 7, September-2018, ISSN 2230-7540

रामकृष्णपरमहंसदिव्यचरितम् में करुण रस एक विवेचन

संध्या*

शोधकर्त्री, विभाग संस्कृत, गाँव - खातीवास, पोस्ट - नांगल सिरोही, जिला - महेन्द्रगढ़, हरियाणा – 123028

सार – भारत में काव्यलोचना की परम्परा का श्री गणेश यद्यपि वैदिक काल में ही हो गया था तथापि उसकी शास्त्र के रूप में प्रतिष्ठा प्रथमतः भरत के नाट्यशास्त्र में हुई जो इस बात का संकेत करता है कि संस्कृत में साहित्यिक समीक्षा का आरंभ बहुत पहले से हो गया होगा। भरत का नाट्यशास्त्र रस सिद्धांत से न केवल पूर्ण परिचित है अपितु उसका सांगोपांग एवं विस्तृत विवेचन किया है।

----------X----------

संस्कृत साहित्य में रस शब्द का प्रयोग अतिप्राचीन काल से होता आ रहा है । काव्य को पढ़ने , सुनने तथा नाट्य को देखने से एक अद्भुत आनन्दानुभूति होती है, इसी आनन्दानुभूति का नाम रस है। रस शब्द की व्युत्पत्ति दो प्रकार से की जा सकती है –

१. रस्यते आस्वाद्यते इति रसः अर्थात् जिसका आस्वादन किया जाये वह रस है ।

२. सरते इति रसः अर्थात् जो प्रवाहित हो, वही रस है । वर्ण विपर्यय के द्वारा सर से रस शब्द निष्पन्न हुआ । इन दोनों व्युत्पत्तियों के आधार पर रस की दो विशेषताएँ स्पष्ट हो जाती हैं – एक आस्वादनीयता और दूसरी द्रवशीलता है। इन दोनों गुणों के कारण संस्कृत वाड्.मय की विभिन्न विधाओं में भिन्न-भिन्न अर्थों में इस शब्द का प्रयोग किया गया है ।

ऋग्वेद में रस का प्रयोग एक स्थान पर सोमरस के लिए आस्वादन अर्थ में किया गया है ।[1]

ऋग्वेद में रस का प्रयोग जल,दुग्ध एवं सोम के लिए हुआ है। स्वाद के समानार्थी रुप में – "स्वादु रसो मधु पयो वराय " अर्थात् हे इन्द्र! तुम्हारे पीने के लिए यह आस्वाद्य और मधु जैसा सोमरस है । तैत्तिरीय उपनिषद में भी इसका वर्णन है ।

यो नो रसं दीप्यति पित्वो अग्ने यो अश्वानां गवां चस्तनुनाम्।[2]

अथर्ववेद में अर्थ सूक्ष्म से सूक्ष्मतर रूप में किया जाने लगा और वह सोम रस में प्रचलित हुआ। सोम रस से उसमें शक्ति ,मद, और आह्लाद को शामिल किया। यह आह्लाद अन्त में जीवन का आह्लाद न होकर आत्मा के आह्लाद के रूप में परिवर्तित हो गया। तैत्तिरीय उपनिषद में परम ब्रह्म को रस कहा गया है। आयुर्वेद में भस्म या रसायन को भी रस कहते हैं। रस का प्रयोग भक्ति रस या मोक्ष के लिए भी किया जाता है किन्तु काव्य में रस शब्द का अर्थ काव्यानन्द या सौन्दर्यानुभूति के लिए भी होता है।

कोष ग्रन्थों के अनुसार रस शब्द के अनेक अर्थ है – स्वाद, जल, वीर्य, श्रृंगार इत्यादि काव्य रस, विष, उव, पारद, राग, गृह, धातु, तिक्त छः भोजन के रस एवं परमात्मा को भी रस कहा जाता है। यथा रसो वै सः। ब्राह्मण ग्रन्थों में उसको मधु के अर्थ में ग्रहण किया गया है यथा – रसो वै मधु। आगे चलकर उपनिषद् ग्रन्थों में उसके आस्वादन और द्रवत्व दोनों प्रकार के स्वभावों का वर्णन बहुत ही सूक्ष्म रूप से किया गया है।

रस का चिदानन्द स्वरूप परमात्मा कहा गया है और रस से ही ऋग्, यजुस्, तथा साम की ऋचाओं की उद्भावना बताई गई है, किन्तु काव्य के अनुरूप उसकी सम्यक् व्याख्या पहले भरत मुनि ने ही की है। रसाधिकारिकं नंदिकेश्वरः इस दृष्टि से नंदिकेश्वर रस सम्प्रदाय के पहले आचार्य ठहरते हैं। नंदिकेश्वर नाट्य, अभिनय, संगीत के आचार्य होने के साथ – साथ कामशास्त्र के भी आचार्य हैं। कामशास्त्र में श्रृंगार रस की प्रधानता होने तथा काव्यशास्त्र में भी श्रृंगार को रसराज के रूप में स्वीकार किये जाने के कारण नंदिकेश्वर रस के ही आचार्य हैं ।[3] रस का अर्थ भरत से पहले श्रृंगार ही समझा जाता था भरत का अभिमत नंदिकेश्वर की अपेक्षा विचार पूर्ण और व्यवस्थित

[1] दधानः कलशे रसम् | ऋ०, ९ .६३ .१३

[2] तै०उप० ,११ .७ .१

[3] नागेन्द्र नाथ उपाध्याय का लेख , नंदिकेश्वर ,त्रिपथगा , पृ० ७३ -७९

होने व रस का शास्त्रीय विवेचन भरत के नाट्यशास्त्र में उपलब्ध होने की प्रमाणिकता के कारण ही रस सिद्धांत का प्रवर्तक भरत मुनि को ही माना जा सकता है ।

रस का महत्त्व

भरतमुनि के अनुसार –

भरतमुनि ने रस के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहा है कि –

न हि रसादृते कश्चिदर्थ प्रवर्तते

अर्थात् रस के बिना किसी अर्थ का प्रवर्तन काव्य में नहीं होता|[4] भरतमुनि ने रस की परिभाषा इस प्रकार की है कि विभाव ,अनुभाव ,व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।[5] उत्तरवर्ती आचार्यों ने भी रस की निष्पन्नता में भरत के ही इसी रस – सूत्र को आधार बनाया।

आचार्य मम्मट का कथन है कि विभावों ,अनुभावों और व्यभिचारी भावों द्वारा अभिव्यक्त किया जाता हुआ स्थायी भाव ही रस कहलाता है |[6]

आचार्य विश्वनाथ ने साहित्य दर्पण में रस की निष्पन्नता प्रतिपादित करते हुए कहा है कि विभाव, अनुभाव और संचारीभावों द्वारा अभिव्यक्त किया जाता हुआ रति आदि स्थायी भाव सहृदयों के लिए रसत्व को प्राप्त कराता है ।[7]

रस – भेद-

रसों की संख्या के विषय में भी काव्य शास्त्रियों में मतभेद है । उत्तरवर्ती आचार्यों ने भरत की रस संख्या आठ से ग्यारह कर दी , किन्तु काव्य जगत् में प्रमुखतः नौ ही रसों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में मिलता है जो निम्न है – श्रृंगार , हास्य , करुण , रौद्र , वीर , भयानक , बीभत्स , अद्भुत और शान्त ।

आचार्य अभिनवगुप्त ने शान्त रस की विधिवत् स्थापना करते हुए इनकी सत्ता को स्वीकार किया है ।[8] आनन्दवर्धन ने शान्त रस की सत्ता को स्वीकारा है । ध्वन्यालोक के तृतीय उद्योत में शान्त रस के विषय में कहा है कि शान्त रस में ही महाभारत का पर्यावसान होता है ।

मम्मट ने भी आठ रसों के स्थायीभावों का परिगणन कर निर्वेद प्रधान शान्त रस को नवम रस के रूप में स्वीकार किया है।[9]

विश्वनाथ ने भी आठों रसों की सत्ता को स्वीकारते हुए नवम रस के रूप में शान्त की सत्ता को भी स्वीकारा है।[10]

रुद्रट ने प्रेयान् रस की वृद्धि करके रसों की संख्या दस कर दी। विश्वनाथ ने भी श्रृंगार आदि नव रसों के साथ वात्सल्य नामक दसवें रस की युक्ति पूर्वक स्थापना की है।[11]

'रामकृष्णपरमहंसदिव्यचरितम्' में करुण रस का विवेचन–

प्रकृत महाकाव्य शांतरस प्रधान है | महाकवि ने शांत रस के अतिरिक्त अन्य रसों का भी समावेश महाकाव्य में किया है | अद्भुत तथा करुण रस महाकाव्य में यत्र – तत्र पर्याप्त मात्रा में व्यक्त हुए हैं | करुण, रौद्र, बीभत्स, भयानक, श्रृंगार, हास्य तथा वात्सल्य रस की अभिव्यक्ति भी प्रसंगानुकूल हुई है |

करुण रस–

प्रियवस्तु के अथवा पुत्रादि के विनष्ट होने पर अथवा मृत्यु होने से तथा अनिष्ट की प्राप्ति से 'करुण' नामक रस होता है ।विद्वानों ने इसका वर्ण कपोत तथा देवता यम माना है । इसमें शोक स्थायी होता है । शोच्य वस्तु आलम्बन माने गए हैं । उसकी देहादिक अवस्था उद्दीपन होती हैं। अदृष्ट दैव की निंदा, भूलुण्ठन, रोदन और विलापदि, विवर्णता, दीर्घ नई:श्वास, अंतर्मुख श्वास, जड़ता, प्रलपन अनुभाव हैं । निर्वेद, मोह, अपस्मार, व्याधि, ग्लानि, स्मृति, श्रम, विषाद, जड़ता, उन्माद और चिंता आदि व्यभिचारी भाव हैं ।

साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ के अनुसार –

---

[4] नाट्य शास्त्र , १ .६ .३१

[5] तत्रविभावानुभाव्यभिचारिसंयोगाद् रस निष्पत्तिः । ना० शा ० ६ .१८ .१९ पृ० ६२०

[6] कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च ,
रत्यादे स्थायिनोलोके तानि चेन्नाट्य काव्ययोः ।
विभावानुभावास्तत्कथ्यन्ते व्यभिचारिणः ,
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायिभावो रसः स्मृतः ।। का० प्र० ४ .२७ .२८

[7] सा० द० ,३ .१

[8] एवं ते नवैव रसा पुमर्थोपयोगित्वेन रञ्जनाधिक्येन वा इयतामेवोपदेश्यत्वात् |अभि०भा०,अभि०,६पृ.१७६

[9] निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमोमतः - का ० प्र० ४१५

[10] श्रृंगारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः
बीभत्सोऽद्भुत इत्यष्टौ रसाःशान्तस्तथा मतः|| सा० द०, ३.१८२

[11] स्फुटं चमत्कारितया वत्सलं च रसं विदुः, सा० द०, ३.२५

www.ignited.in

इष्टनाशादनिष्टाप्ते: करुणाख्यो रसो भवेत्।

धीरै: कपोतवर्णोऽयं कथितो यमदैवत: ।।

शोकोऽत्र स्थायिभाव: स्याच्छोच्यमालम्बनं मतम् ।

तस्य दाहादिकावस्था भवेद्दीपनं पुनः।।

अनुभावा दैवनिंदाभूपातक्रंदितादय:।

वैवर्ण्योच्छवासनि:श्वास स्तम्भप्रलापनानि च ।।

निर्वेदमोहापस्मार व्याधिग्लानिस्मृतिश्रमा: ।

विषादजडतोन्मादचिन्ताद्या व्यभिचारिण: ।।[12]

दशरूपककार धनञ्जय ने करुण रस का लक्षण देते हुए कहा है –

इष्टनाशादनिष्टाप्तौ शोकात्मा करुणोऽनुतम् ।

निश्वासोच्छवासरुदित स्तम्भप्रलपितादय: ।।

स्वापापस्मारदैन्याधिमरणालस्यसम्भ्रमा: ।

विषादजडतोन्मादचिन्ताद्या व्यभिचारिण: ।।[13]

प्रकृत महाकाव्य में करुण रस की भी अभिव्यक्ति हुई है । द्वितीय सर्ग में रामकृष्ण के पिता की मृत्यु के प्रसंग में , पति की मृत्यु के उपरांत चंद्रामणि तथा उसके बेटे बाल गदाधर के विरह प्रसंग में, रामकृष्ण के ज्येष्ठ भ्राता रामकुमार की पत्नी की मृत्यु के प्रसंग में करुण रस की अभिव्यंजना हुई है ।

यथा-

जात: सुदुर्बलतनुर्न शशाक वक्तुं

निश्चेष्ट एव बहुकालमवीवहत्स:।

वारत्रयं रघुपते: स्मरणं विधाय

दुर्गोत्सवे शुभदिने विजहौ शरीरम् ।।[14]

चंद्रामणि का पति बहुत दुर्बल हो गया था और बोल भी नहीं सकता था। इस प्रकार निश्चेष्ट ही उसने बहुत समय बिताया। दुर्गोत्सव के शुभदिन पर तीन बार रघुपति का स्मरण कर उसने शरीर छोड़ दिया।

प्रस्तुत श्लोक में शोक स्थायीभाव है, दुर्बल शरीर, बोल ना पाना व अंत में मृत्यु को प्राप्त करना आलम्बन विभाव हैं, दुःख, निश्चेष्टता आदि अनुभाव हैं तथा निर्वेद, दैन्यता आदि संचारीभावों के साथ करुण रस की अभिव्यक्ति हुई है हैं ।

जिस प्रकार आश्रय रुपी पेड़ के कटने से गिरी हुई बेल दुखी होती है उसी प्रकार देव स्वरुप पति के विरह में दुखी चन्द्रामणि का प्रसंग देते हुए कहा है

देवस्वरूप: शुचि: भर्तृविहीनतायां

चंद्रामणिर्बहुविधं व्यथिता बभूव ।

क्रौंचीव जीवनसखे निधनं प्रयाते

छिन्ने निजाश्रयतरौ पतिता लतेव ।।[15]

प्रस्तुत पद्य में शोक स्थायी भाव है, पति की मृत्यु आलम्बन विभाव है, पेड़ के कटने पर गिरी हुई बेल की भांति दुःखी होना अनुभाव है तथा निर्वेद, जडता आदि व्यभिचारिभाव हैं। इस प्रकार विभावानुभाव व संचारीभाव के मेल से करुण रस की निष्पत्ति हुई है |

गदाधर के वियोग दुःख का उल्लेख करते हुए कहा है –

गूढा पितुर्विरहतापभावानुभूति-

र्बालं गदाधरममुं व्यथते स्म भूय: ।

विस्मर्तुमेष जनकस्य वियोगदुःखं

तत्त्वार्थं चिन्तनकृते व्रजति स्म दावम् ।।

कृत्वा वशे निजमन: पितृशोकतप्तं

साहाय्यमेष कुरूते स्म कृतौ जनन्या ।

एवं सुतस्य वसतोऽविरतं समीपे

चन्द्रामणे:शिथिलतामगमद् वियोग: ।।[16]

[12] सा० द० ,३ .२२२ -२२५
[13] द० रु० , ४ .८ .८२
[14] रा० दि० च०, २ .३५
[15] रा० दि०च०,२ .३६
[16] रा० दि० च०, २ .३८ .३९

प्रस्तुत पद्यों में शोक नामक स्थायीभाव है, पिता की मृत्यु आलम्बन विभाव है, विरह ताप से उत्पन्न गूढ अनुभूति आदि अनुभाव हैं तथा चिंता, त्रस आदि व्यभिचारी भाव हैं ।

अतः विभावानुभाव व व्यभिचारीभाव की स्थिति के कारण यहाँ करुण रस की सुन्दर योजना है |

रामकुमार की पत्नी की मृत्यु का उल्लेख करते हुए कहा है कि –

पुत्रं प्रसूय शुचिशोभनगात्रभङ्गिम्

हा हा मृता तदनु रामकुमारपत्नी ।

अस्तं गतैव सहसा सुखशांतिवेला

वासं चकार विपदा क्षुदिरामगेहे ।।

ग्रस्तोऽजनिष्ट परिवारं जनो विपद्भि-

र्जानाति कोऽपि न हि दैव विलास चेष्टाम् ।

चित्रं विदन्ति मनुजा निखिलं तदेतद्

भूतार्थतश्चरति तन्नियतेर्विधानम् ।।[17]

इन श्लोकों में पत्नी की मृत्यु आलम्बन विभाव है, छोटा शिशु व परिवार का विपदाओं से घिरना उद्दीपन विभाव , दुःख ,दारिद्रय, दीनता, विषाद आदि अनुभाव तथा ग्लानि, जडता , दैन्यता आदि व्यभिचारी भाव हैं । इन दोनों पद्यों में करुण रस का आविर्भाव हुआ है ।

प्रकृत महाकाव्य के दशम सर्ग में नरेंद्र की पिता की मृत्यु के संदर्भ में भी करुण रस की अनुभूति हुई है । यथा –

नरेंद्रगेहे कठिना विपत्ति-

र्वज्राहतिर्वा सहसापपात।

हृदोगतिस्तस्य पितुर्निरुद्धा

बन्धुप्रलापैः सह सोऽस्तमायात् ।।[18]

अचानक नरेंद्र के घर पर कठिन विपत्ति आ गई । उसके पिता की हृदय गति रुक गई और उनकी मृत्यु हो गयी । प्रस्तुत पद्य में शोक स्थायीभाव है, पिता की मृत्यु आलम्बन विभाव , दुःख , रुदन आदि अनुभाव हैं तथा निर्वेद आदि संचारीभाव हैं ।इस प्रकार यहाँ करुण रस का सुन्दर परिपाक हुआ है |

निष्कर्ष:-

इस प्रकार रसों की दृष्टि से रामकृष्णपरमहंसदिव्यचरितम् महाकाव्य एक उत्तम काव्य है। इस महाकाव्य में अलंकार शास्त्रियों द्वारा निर्दिष्ट रसों का समावेश कुशलतापूर्वक किया है। रस को यदि काव्य की आत्मा मान लिया जाए तो रामकृष्णपरमहंसदिव्यचरितम् महाकाव्य एक श्रेष्ठ काव्यग्रन्थ प्रमाणित हो जाता है। रसों के प्रयोग में कवि ने अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है |

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. रामकृष्णपरमहंस दिव्यचरितम्, पं० बालकृष्ण भारद्वाज विरचित
2. दशरूपक, धनञ्जय
3. ऋग्वेद
4. तैतरीय उपनिषद
5. काव्यप्रकाश,मम्मट
6. साहित्यदर्पण, विश्वनाथ
7. नाट्यशास्त्र, भरतमुनि
8. त्रिपथगा, नंदिकेश्वर
9. अभिनवभारती, अभिनवगुप्त

Corresponding Author

संध्या*

शोधकर्त्री, विभाग संस्कृत, गाँव - खातीवास, पोस्ट - नांगल सिरोही, जिला - महेन्द्रगढ़, हरियाणा – 123028

lakshya2swami@gmail.com

[17] रा० दि०च० , २ .५३ .५४

[18] रा० दि० च० ,१० .५३